साई, राम ,कृष्ण, परमशिव कहते हैं, उनके आश्रय में रहना, उनका नित्यस्मरण करना, उनकी आज्ञा में रहना, वे ही मेरा आधार है, इस निष्ठा के साथ जीना यह प्रपत्ति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

चौथा तत्त्व है- चण्डिका हमें अपने पास लेकर परमात्मा के हाथों में सौंप दें, ऐसी याचना करना। माते चण्डिके, आप मुझे अपनी गोद में ले लीजिए और परमात्मा के हाथों में सौंप दीजिए, ऐसी चण्डिका से प्रार्थना करना।

और पाँचवा तत्त्व है- चण्डिका की ही कृपा से अधिक से अधिक भक्ति संपादन कर गृहस्थी तथा अध्यात्म इन्हें यशस्वी, सफल सम्पूर्ण बनाने के लिए चण्डिका की शरण में जाना। शरण जाने की क्रिया अर्थात् 'तुमबिन कौन सहारा', 'आप ही एकमात्र आधार', 'अनन्यभाव', 'पूर्ण प्रामाणिकता' इस निष्ठा के साथ उनकी और उनके पुत्र की शरण में रहना।

ये पाँच तत्त्व धारण कर 'श्रीमंगलचण्डिकाप्रपत्ति' और 'श्रीरणचण्डिकाप्रपत्ति' ये प्रपत्ति की जाती है। ये दोनों नित्य रूप से कैसे करते हैं? श्रीगुरुक्षेत्रम् मन्त्र का विश्वासपूर्वक स्वीकार कर उसका नित्य जाप करने से यह 'नित्यप्रपत्ति' होती है। अब उसकी 'नैमित्तिकप्रपत्ति' कैसे की जाती है, यह हमें देखना है।

स्त्रियों के लिए 'श्रीमंगलचण्डिकानैमित्तिकप्रपत्ति' संक्रांति के दिन (१४ अथवा १५ जनवरी को) की जाती है। इसी दिन क्यों? क्योंकि इसी दिन माता महिषासुरमर्दिनी ने पृथ्वी पर पहला कदम रखा था। ऋषि कर्दम तथा देवहूति इनके आश्रम में इस संक्रांति के दिन ही माता महिषासुरमर्दिनी ने कतराज आश्रम में महिषासुर को मारने के लिए पहला कदम रखा। संक्रांति के दिन सूर्यास्त के बाद स्त्रियों के लिए 'श्रीमंगलचण्डिकानैमित्तिकप्रपत्ति' की जाती है, क्योंकि महिषासुरमर्दिनी ने कतराज आश्रम में पहला कदम रखा, वह सूर्यास्त के बाद ही, क्योंकि यदि वे सूर्य के रहते आ जातीं, तो उनका तेज लोग सह नहीं पाते।

इसलिए उन्होंने सूर्यास्त के बाद पूर्ण अन्धकार के हो जाते ही अपना पहला कदम रखा।

संक्रांति के दिन सूर्यास्त के बाद खुली जगह में, स्त्रियों ने एकत्रित होकर यह प्रपत्ति करनी होती है। संक्रांति के दिन यह 'श्रीमंगलचण्डिकाप्रपत्ति' करने से हर एक स्त्री अपने परिवार की रक्षणकर्ता सैनिक बन जाती है, साथ ही हर एक की 'बॉडीगार्ड' बन जाती है। फिर चाहे वह एक माँ हो, बहन हो, पत्नी हो या अन्य किसी भूमिका में हो, वह अपने सारे घर की रक्षणकर्ता बन जाती है। अब यह प्रपत्ति कैसे करनी चाहिए? कोई बड़ा हॉल लेकर करेंगे तो नहीं चलेगा; क्योंकि इसे तो चार दीवारों में, बन्द स्थिति में नहीं करना है, बल्कि घर के बाहर किसी खुले स्थान पर, उदा. सागरकिनारे, नदीकिनारे, चौक में, घर की बाल्कनी में, चाल की रेलिंग के पास, दो चालों के बीच की जगह में, इस तरह खुले स्थान पर करना आवश्यक है। इस प्रपत्ति के लिए जितनी अधिक स्त्रियाँ एकत्रित होंगी, उतना अच्छा है। सोलह वर्ष से अधिक आयु की कोई भी स्त्री यह कर सकती है। एक वर्ष किया, तो हर वर्ष करना ही होगा, ऐसा बिलकुल भी नहीं है। लेकिन यदि आप अपने परिवार का भला चाहती हैं, तो हर साल करना आवश्यक है। इसके के बारे में पूरी जानकारी आपको मिलने ही वाली है और साथ ही डायग्राम भी। इस व्रत में, जहाँ महिषासुरमर्दिनी ने पहला कदम रखा, उस कतराज आश्रम का स्थान - अर्थात् उनके पिता के आश्रम का स्थान प्रतीकरूप से निर्माण किया जायेगा।

यह कैसे किया जायेगा? तो उसकी विधि इस तरह है- एक चौकी या पीढ़े पर बड़ी परात रखें। परात में गेहूँ उसपर कलसी या कलश स्थापित कर उसमें चावल, कलश पर ताम्हन और उसमें देवी के दो पदचिह्न। दाहिना पदचिह्न कुंकुम का और बायाँ पदचिह्न हलदी का बनायें। उस परात में कलश का आधार लेकर त्रिविक्रम की फोटो रखें। स्त्रियों को यदि

मासिक धर्म भी हो, तब भी चिन्ता की कोई बात नहीं है; जीभ और नाभि को उदी लगाकर वे यह कर सकती हैं। बाधा उत्पन्न नहीं होगी।

स्त्रियों को स्नान करके ही पूजा हेतु आना है। उनके हाथ की थाली में उनके प्रपत्तिपूजाद्रव्य रहने चाहिए। इन पूजाद्रव्यों के बारे में मैं बाद में बताऊँगा। साथ ही अभिचारनाशक पोटली होनी चाहिए। अभिचार अर्थात् करनी करने से लेकर नज़र लगने तक जो कुछ भी हम कहते हैं, वह कुकर्म। यह कुकर्म यानि कि अभिचार। और पोटली कौनसी? तो अभिचारनाशक। यह पोटली बनायी कैसे जाती है? तो खाने के पान (बीटल लीफ) में नमक, राई और कपूर रखकर उस पान को रस्सी से बाँधना और इस तरह बनेगी अभिचारनाशक पोटली।

यह थाल, उसमें स्थित सामग्री, मैं बाद में बतानेवाला हूँ, उसे हाथ में लेकर सभी स्त्रियाँ खड़ी रहेंगी और वह स्त्री, जो उन सबमें आयु से सबसे ज्येष्ठ होगी, वह आरती करेगी और अन्य स्त्रियाँ आरती गायेंगी- माता चण्डिका की आरती, जो हम सब जानते हैं - 'माते गायत्री, सिंहारूढ भगवती, महिषासुरमर्दिनी, क्षमस्व चण्डिके, जय दुर्गे अखिल विश्व की जननी माँ उदे उदे उदे उदे उदे ।।' थाल हाथों में लेकर प्रत्येक स्त्री चण्डिका के पदचिह्नस्थान की अर्थात् कतराज आश्रम की ९ प्रदक्षिणा करेगी। प्रदक्षिणा करते समय श्रीगुरुक्षेत्रमंत्र ज़ोर से कहती रहेगी। प्रदक्षिणा के पूर्ण होते ही उस पोटली से त्रिविक्रम की नज़र उतारनी है और उनसे कहना है कि मेरे घर को लगनेवाली कोई भी कुदृष्टि, कुबुद्धि इन सबका आप अपनी माता की सहायता से नाश करें। और फिर उस पोटली को परात या होमकुंड या गड्ढे में, कपूर एवं लकड़ियों की सहायता से उत्पन्न की गयी अग्नि में अर्पण करना है। यह उत्पन्न अग्नि अर्थात् महिषासुरमर्दिनी का तेजोवलयम्। इस कृति द्वारा आप क्या करते हैं? आप उन त्रिविक्रम को ज़िम्मेदारी सौंप देते हैं- 'मेरे घर को त्रस्त करनेवाली बाधा का आप निवारण कीजिए।' यहाँ पर

गुरुक्षेत्रम् मन्त्र के कारण उस अग्नि का रूपान्तरण तेजोवलयम् में हो चुका होगा और आपके घर को त्रस्त करनेवाली कुदृष्टि, कुबुद्धि, कुकर्म इस तेजोवलयम् जा चुके होने के कारण आपके घर का कल्याण ही होगा।

पूजा समाप्ति पर 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस मन्त्र का नौं बार जाप करते हुए सभी स्त्रियाँ उन पदचिह्नों पर अक्षत चढ़ाएँ और त्रिविक्रम को सुगंधित फूल अर्पण करें और तेजोवलयम् की अग्नि को कडवें नीम के पत्तों से शान्त करें। उसके पश्चात् फिर एकत्रित हुईं स्त्रियाँ उन पदचिह्नों के हलदी-कुंकुम को घर न ले जाते हुए उन्हें वहीं पर स्वयं के माथे पर लगाये और जिन्हें माथे पर लगाने से डर लगता है, वे उसे गले पर लगाये। मेरी बहन घर पर है। नहीं। हलदी-कुंकुम को वहीं पर स्त्रियाँ स्वयं को लगाये।

अब प्रपत्तिपूजाद्रव्य की सामग्री क्या है? तो सहिजन की सेम, केलें, ककड़ी या लौकी, श्रीफल यानि कि नारियल, गाजर, मूली या कुँदरू, उड़द दाल, तिल तेल, दही, हलदी (हलदी की गाँठ नहीं), अदरक, गुड़, इमली, गन्ना, सुगन्धित फूल। सुगन्धित फूल आप अर्पण करनेवाले हैं। उनमें से केलें देवी के सामने रखकर उनका एकत्रित प्रसाद बनाकर उन्हें घर न ले जाते हुए सभी स्त्रियाँ उनका वहीं पर सेवन करें। कृपया दर्जनों केलें मत ले जाइए। दस स्त्रियाँ यदि दस दर्जन केलें लाती हैं, तो वे केले खाने तक प्रदक्षिणा करना दूर की बात है, वे घर तक चलकर भी नहीं जा सकती। लेकिन दही घर ले जाकर घर के पुरुषों को प्रसाद के तौर पर दे दें। स्त्रियाँ उस दही को न खायें। यदि घर में किसी कारणवश कोई पुरुष न हो, तो उस दही को किसी वृक्ष की जड़ को अर्पण करें। गन्ना घर ले जाकर स्वयं वह स्त्री खाये और घर की अन्य स्त्रियों में बाँटें। उस दिन उसे थोड़ा तो अवश्य खाये, लेकिन यह बन्धन नहीं है कि सारा का सारा गन्ना खाकर उसी दिन खत्म करें।

बचे हुए प्रपत्तिपूजाद्रव्यों (केलें, दही, गन्ना और सगन्धित फूल इन्हें छोड़कर) से सांबार बनाकर उसी रात को घर की स्त्रियाँ तथा पुरुषों को उसे रोटी और चावल इनके साथ खाना चाहिए। सांबार तैयार करने के लिए उसमें मसालों का उपयोग कर सकते हैं। साथ ही स्वाद एवं स्वास्थ्य के लिए उसमें कड़ीपत्ते का इस्तेमाल ज़रूर करें। लेकिन उस रात को अन्य किसी भी सब्ज़ी का सेवन न करें। रोटी और चावल दोनों को किसके साथ खाना है? तो इस सांबार के साथ। आ गयी बात समझ में।

यह सारा व्रत है- 'श्रीमंगलचण्डिकाप्रपत्ति', स्त्रियों के लिए। यह करनेवाली स्त्रियाँ आदिमाता चण्डिका की सैनिक बन जाती हैं; स्वयं के घर की रक्षा हेतु, स्वयं के आप्तों की रक्षा हेतु। बच्चे को स्कूल से लौटने में देर हो जाती है, तो चिन्ता सताती है। बेटा कहीं किसी फ़ालतू लड़की के प्यार में फँस जाता है तो चिन्ता सताती है। बेटी किसी ग़लत आदमी के साथ भाग गयी, तो चिन्ता सताती है। लेकिन हिफ़ाज़त करने का कार्य आज स्त्री कर सकती है। वह अबला नहीं होगी। वह अबला नहीं रहेगी, वह दुर्बल नहीं रहेगी। वह स्वयं के घर की रक्षा करने में स्वयं समर्थ बनेगी। लेकिन एक बात ज़रूरी है, नित्य गुरुमन्त्र का पठन और संक्रान्ति को इस व्रत को मन:पूर्वक करना। आ गयी बात समझ में?

अब पुरुषों के लिए रहनेवाली 'श्रीरणचण्डिकानैमित्तिकप्रपत्ति' कैसे करनी है, यह देखते हैं। वह श्रावण महीने के किसी भी सोमवार की जा सकती है। स्त्रियों के लिए केवल एक ही दिन (संक्रांत) और पुरुषों के लिए चार या पाँच सोमवारों में से एक, ऐसा क्यों? क्योंकि स्त्रियों और पुरुषों के ऊर्जा केंद्रों में बहुत फर्क है। उनकी ग्रहणक्षमता बहुत भिन्न है। यह प्रकृति द्वारा ही किया गया फ़र्क़ है। स्त्रियों की ग्रहणक्षमता और पुरुषों की ग्रहणक्षमता इनके बीच के फ़र्क़ का कारण है- उनके शरीर में रहनेवाले विभिन्न हॉर्मोन्स। इसीलिए पुरुषों को श्रावण महीने का सोमवार और स्त्रियों को संक्रान्ति का एक ही दिन ये दिन व्रत के लिए दिये गये हैं।